www.myindorenews.com - e-mail : myindorenews@gmail.com

संपादक - जितेन्द्र सिंह भाटिया

माय इन्दौर

वर्ष 03 अंक 14 पेज 8 मूल्य 2/- इंदौर, प्रति सोमवार 26 अक्टूबर 2015

डाक पंजीयन क्रमांक : MP/IDC/1479/2014-2016

धर्म का महासंगम

आप पधारे... अभिभूत हुए हम

माय इन्दौर, नगर प्रतिनिधि।

सिंहस्थ के ठीक पूर्व इंदौर में आयोजित अंतरराष्ट्रीय धर्म सम्मेलन में दुनियाभर के सभी धर्मों के विद्वानों ने अद्भुत प्रस्तुति देकर साबित किया कि जीवन में एक-दूसरे का सहयोग और सहमति की भावना को विकसित करना ही धर्म है। मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान ने धर्म की विस्तृत व्याख्या करते हुए कहा कि तन, मन, बुद्धि और आत्मा का सुख जिससे मिले, वही वास्तविक धर्म है। सीएम ने अपनी बातें खुद के साथ बीती घटनाएं सुनाकर की जिस पर जमकर तालियां बजीं।

धर्म सम्मेलन के अंतिम दिन श्रीश्री रविशंकरजी ने कहा केवल बुद्धिमान व्यक्ति ही धर्म का पालन करता है, मूढ़ नहीं। आजकल किसी भी धार्मिक व्यक्ति को देखकर युवक-युवतियां कहते हैं-बेवकूफ है। ऐसा नहीं है, वो ही समझदार है, जो धार्मिक है, उसके चेहरे पर प्रसन्नता रहती है। वो हिंसक नहीं होता, गाली-गलौज नहीं करता और न ही किसी का दिल दुखाता है। मेरा मानना है कि आज युवा आत्महत्या कर रहे हैं तो उसके पीछे धर्म का अभाव होना ही है। धर्म आत्मभाव का प्रतिरूप है, करुणा तो पलायनवाद है। किसी के प्रति करुणा दिखाना कुछ हद तक अहसान है। क्या हमारे हाथ में चोट लग जाए और हम उसका उपचार करें तो वो करुणा है? नहीं, वो आत्मभाव है, जो मन से उपजता है। ये आत्मभाव भी कहीं बाहर से नहीं आया, यहीं भारत में जन्मा है। करुणा तो धर्म की सीढ़ी भर है, धर्म जिसके मन में होता है वो खुद का नहीं, समाज का कल्याण सोचता है। जिसे समाज का कल्याण करना है वो व्यक्तिगत भावनाओं से ऊपर उठ जाता है। सिंहस्थ की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा उसे मेला मत कहो, वो तो वैचारिक महाकुंभ है। उसे मेला समझकर देखने मत जाना, सिंहस्थ जीवन परिवर्तन का माध्यम है। एक बात का ख्याल रखना कि सिंहस्थ में पर्यावरण पर भी विचार करना, वो भी धर्म ही है।

अंतरराष्ट्रीय धर्म सम्मेलन में दुनियाभर के विद्वानों ने रखे विचार

देखें पृष्ठ 3 भी...

तीन दिवसीय धर्म सम्मेलन के अंतिम दिन श्रीश्री रविशंकर, लोबसंग सांगे व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान।

सुख और शांति पा लेना ही धर्म है

श्रीश्री रविशंकर को सुनने के लिए शहर के साथ ही दूसरे शहरों से भी लोग बड़ी संख्या में पहुंचे, जिसके चलते आयोजकों को अतिथियों के प्रवेश पर कड़े नियम लागू करना पड़े। इसके चलते जिन लोगों के पास थे उन्हें ही प्रवेश दिया गया, फिर भी निर्धारित समय तक हॉल खचाखच भर गया। फिर भी लोग अंदर जाने के लिए विवाद करते रहे, लेकिन वहां तैनात जवानों ने जैसे-तैसे समझाइश देकर लोगों को शांत कराया। हॉल में बैठा हर व्यक्ति श्रीश्री रविशंकर का बेताबी से इंतजार कर रहा था और जैसे ही वे अंदर घुसे लोगों ने चिल्लाकर उनका अभिवादन किया।

भारत ने सिखाया दुनिया को प्रेम करना

धर्मशाला स्थित तिब्बत के प्रधानमंत्री लोबसंग सांगे ने कहा भारत ने दुनियाभर को प्रेम से जीना सिखाया। हमारे धर्मगुरु दलाई लामा ने भी प्रेम, दया, करुणा की बात कही है। हमें जीवन में चार बातें करुणा, दया, प्रेम और दान को आचरण में उतारना चाहिए। ईश्वर के प्रति मन में अगाध श्रद्धा होना चाहिए, लेकिन हम सुख में ईश्वर को याद नहीं करते। कबीरदास ने कहा था-दुःख में सिमरन सब करें, सुख में करे न कोई, जो सुख में सिमरन करे तो दुःख काहे को होई। उन्होंने रवींद्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानंद का भी जिक्र किया और कहा उन्होंने धर्म का मार्ग दिखाया था और उस पर चलने पर ही हम विश्व शांति कायम कर सकते हैं।

ये भी राजधर्म है

इस अवसर पर मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान ने कहा जब इस अंतरराष्ट्रीय धर्म सम्मेलन का निर्णय लिया था तो कई लोगों ने कहा कि आप शासक हैं। क्यों इस धर्म के झंझट में पड़ते हैं? मैंने कहा कि लोगों को धर्म की सही व्याख्या मिले, ये भी राजधर्म है। मैंने ऐसा किया तो कोई गलत नहीं किया।

धर्म सम्मेलन का पहला दिन

रविवार प्रातः 9 बजे पहला सत्र शुरू हुआ। साउथ कोरिया की डोंगगक यूनिवर्सिटी के प्रो. सुन कैन किम की अध्यक्षता में केरला की मारथोमा सभा के प्रमुख जोसेफमारथोमा मेट्रोपोलिटन, चेन्नई के विष्णुमोहन फाउंडेशन के श्रीहरि प्रसाद स्वामी, होलिस्टिक साइंस रिसोर्स सेंटर के अतिथि प्रोफेसर डॉ. शैलेंद्र मेहता और लोटस टेम्पल के ट्रस्टी डॉ. एके मर्चेंट ने संबोधित किया। दूसरे सत्र की अध्यक्षता वियतनाम के बुद्धिस्ट यूनिवर्सिटी के उपाध्यक्ष ली मन थाट ने की। इसमें ऑल इंडिया उलेमा बोर्ड के अध्यक्ष हजरत सैयद मोहम्मद अशरफ किचोचवी मुख्य वक्ता रहे। उनके साथ यूएसए के होलिस्टिक साइंस चेरिटेबल रिसोर्स फाउंडेशन के साउथ ईस्ट चेप्टर डॉ. राधाकृष्णन, प्रसन्ना ट्रस्ट के संस्थापक स्वामी सुखबोधानंद और जापान की अचिगकुईन यूनिवर्सिटी के प्रो. शॉन हिनो ने भी संबोधित किया। शाम 6.30 बजे से तीसरा सत्र वाराणसी के सेंट्रल तिब्बत यूनिवर्सिटी के पूर्व कुलपति प्रो. गेशे वारंग सेम्टन की अध्यक्षता में शुरू हुआ।

सम्मेलन का दूसरा दिन

25 अक्टूबर को प्रातः 9 बजे पहला सत्र शुरू हुआ। साउथ कोरिया की डोंगगक यूनिवर्सिटी के प्रो. सुन कैन किम की अध्यक्षता में केरल की मारथोमा सभा के प्रमुख जोसेफमारथोमा मेट्रोपोलिटन, चेन्नई के विष्णुमोहन फाउंडेशन के श्रीहरि प्रसाद स्वामी, होलिस्टिक साइंस रिसोर्स सेंटर के अतिथि प्रोफेसर डॉ. शैलेंद्र मेहता व लोटस टेम्पल के ट्रस्टी डॉ. एके मर्चेंट ने संबोधित किया। दूसरे सत्र की अध्यक्षता वियतनाम के बुद्धिस्ट यूनिवर्सिटी के उपाध्यक्ष ली मन थाट ने की। इसमें ऑल इंडिया उलेमा बोर्ड के अध्यक्ष हजरत सैयद मोहम्मद अशरफ किचोचवी मुख्य वक्ता रहे।

सम्मेलन का तीसरा दिन

पहला सत्र लुम्बिनी बुद्धिस्ट यूनिवर्सिटी काउंसिल नेपाल के कुलपति प्रो. डॉ. नरेश मन बज्राचार्य की अध्यक्षता में हुआ। इजराइल के रब्बी शहर के ओडेड वीनर, लंदन की बुद्धिस्ट रियलिस्ट सेंटर के डॉ. सुमाना सिरी, सेंटर फॉर स्टडीज इन सिविलाइजेशन के सदस्य सचिव भुवन चंदेल और वियतनाम बुद्धिस्ट यूनिवर्सिटी के डिप्टी रेक्टर डॉ. थीच हट तू ने विचार रखे। दूसरे सत्र की शुरुआत राजस्थान यूनिवर्सिटी की प्रो. डॉ. कुसुम जैन की अध्यक्षता में हुई।

सामने जो बुजुर्ग हैं, पहले उन्हें ओढ़ाओ कंबल

श्रीश्री रविशंकर ने कहा इलाहाबाद कुंभ में एक रात हम ढेर सारे कंबल लेकर निकले। एक पुल के नीचे ठंड से ठिठुर रहे युवक को जैसे ही हमने कंबल ओढ़ाया तो वो बोला- वो सामने कुछ बुजुगड़ लेटे हैं, उन्हें कंबल ओढ़ा दो। मैं तो युवा हूं, ठंड सहन कर लूंगा, वो नहीं कर पाएंगे। ये धमड़ है। हमने कहा कि तुम कंबल ओढ़ लो, हम उन्हें भी ओढ़ा देंगे। उसने कहा-पहले उन्हें ओढ़ाओ, बाद में बचेंगे तो मैं ओढ़ लूंगा।

पेट फूलता है तो कहते हैं मप्र बढ़ गया

श्रीश्री रविशंकर ने कहा मध्यप्रदेश भारत का दिल है, यहां के लोकप्रिय मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान धार्मिक भी हैं और समाज के हितरक्षक भी। मध्यप्रदेश समृद्ध हो यही कामना, किसी का पेट बढ़ जाता है तो हम लोग मजाक में कहते हैं - तेरा मध्यप्रदेश बढ़ गया।

Website माय इंदौर अब ई-पेपर में भी उपलब्ध। ताजा खबरें और वीडियो देखने के लिए लॉगिंन करें :- www.myindorenews.com

तीन दिनी तृतीय अंतरराष्ट्रीय धर्म सम्मेलन का समापन

इंदौर। विश्व शांति, मानव कल्याण और विकास की अवधारणा हर धर्म के मूल में हैं। सभी धर्मों का उद्देश्य मानव सेवा, शांति तथा सद्भाव है। प्रत्येक व्यक्ति की धर्म की आधारभूत संरचना को समझने और उससे खुद को जोड़ने की कोशिश के कारण धार्मिक बहुलता का जन्म होता है। तृतीय अंतरराष्ट्रीय धर्म-धम्म सम्मेलन में भाग लेने आए देश-विदेश के अनेक धर्माचार्यों का कमोबेश यही मानना है। हमने उनमें से कुछ से धर्म और उसकी अवधारणा पर उनके विचार जाने...

लोक कल्याण का विचार पवित्र है

विभिन्न धर्मों के धर्माचार्यों के विचारों से अवगत होने पर निश्चित सबको सकारात्मक दिशा मिलती है। इस तरह की चर्चा वर्तमान समय में अपने में बहुत ही महत्वपूर्ण है। विश्व बंधुत्व और लोक कल्याण के उद्देश्य से किया गया हर विचार बहुत ही पवित्र है।

-चैतन्य प्रज्ञाजी, जैन विश्वविद्यालय लाडनू (राजस्थान)

दुनिया का पथ प्रदर्शक है धर्म

धर्म को राजनीति से हमेशा दूर ही रखना या रहना चाहिए। दोनों यूं तो अपने आपमें महत्वपूर्ण हैं, मगर धार्मिकता व धर्म हर मानव के लिए राजनीति से ज्यादा महत्व रखता है। जीवन में ज्ञान अनुभव से आता है, किताबों से शायद बहुत ही कम। धर्म दुनिया का पथ प्रदर्शक है।

-ज्ञानी हरजीतसिंह

धर्म प्रधान जीवन जीने की कला

धर्म सम्मेलन से मानव कल्याण का मार्ग खुलेगा। लोग धर्म को समझेंगे तो बड़े-छोटे का भेदभाव मिटेगा और समाज को धर्म प्रधान जीवन जीने की कला सीखने को मिलेगी। मैंने भी कार्यक्रम में अपने विचार रखे व अन्य महापुरुषों के विचार श्रोता बनकर सुने भी।

शीतलदास महाराज (ग्वालियर)

मूल स्वरूप पर कायम रहना होगा

इस तरह के धार्मिक और धर्म आधारित आख्यानों के आयोजन से वैश्विक समाज को एक नई दिशा मिल सकती है। यह हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है कि हम अपने धर्मों के प्रति सच्ची आस्था और निष्ठा को पूर्ण रूप से कायम रखें।

-राधामुनी, ग्रीस

धर्म का काम शिक्षित करना है

बौद्ध धर्म की परंपरा लगभग तीन हजार से ज्यादा साल पुरानी है। इससे दुनिया ने बहुत कुछ ग्रहण किया है। शांति और विकास के लिए हर धर्म अपनी तरह से हर काल में लोगों को शिक्षित करता रहा।

-थिक न्यातू, विएतनाम

कुछ नया मिलेगा

कोच्चि केरल विश्वविद्यालय से पीएचडी करने वाली शोधार्थी शिमी ने कहा यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे धर्म सम्मेलन में शामिल होने का अवसर मिला। मैं धर्म विषय पर ही शोध कर रही हूं। इस सम्मेलन से मुझे नई शिक्षा व काफी कुछ सीखने को मिला।

-शिमी, शोधार्थी

पशु-पक्षी धर्म निभा सकते हैं तो मनुष्य क्यों नहीं

सांई बाबा के वेश में सम्मेलन में सबके आकर्षण का केंद्र बने आंध्र से आए प्रो. तिरुपति स्वामी का कहना है कि आज धर्म का स्वरूप विकृत हो रहा है। व्यक्ति मन से सोचता तो है, लेकिन आचरण में नहीं लाता। विष्णु संहिता में कहा गया है कि सबसे बड़ा धर्म कर्तव्य होता है। जब पशु पक्षी अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर सकते हैं और बिना लड़े शांति से रह सकते हैं तो मनुष्य क्यों नहीं? धर्म का अर्थ सही रूप से कर्तव्यों का पालन करना है।

प्रेम की बात करती है बाइबल

केरल के मालांकारा आर्थोडॉक्स सीरियन चर्च के प्रमुख बेसलियस मारथोमा का कहना है बाइबल तो देती ही शांति और प्रेम का संदेश है। केरल में किसी तरह का कोई सामाजिक तनाव नहीं है। जो खबरें आती हैं वो पूरी तरह सही नहीं हैं। ईसाई धर्म में किसी भी धर्म के प्रति कोई गलत बात नहीं कही गई है। दिक्कत ये है कि भ्रम और भ्रांतियां जन्म ले लेती हैं। केरल में हम पूरी कोशिश कर रहे हैं कि धर्म की सही व्याख्या लोगों तक पहुंचे।

शासन के इंतजाम से अतिथि खुश

धर्म सम्मेलन में आए देश-विदेश के धर्माचार्य व शिक्षाविद शासन के इंतजाम से खुश हैं। शासन ने कई महीने पहले ही सम्मेलन की तैयारियां शुरू कर दी थीं। दो महीने पहले ही अतिथियों को आमंत्रित करना शुरू कर दिया था। 'मानव कल्याण के लिए धर्म' विषय पर आयोजित हो रहे सम्मेलन का जिम्मा संस्कृति विभाग, सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय और सेंटर फॉर स्टडी ऑफ रिलीजन एंड सोसायटी को मिलने के बाद कार्ययोजना तैयार की गई।

केरल के मालांकारा आर्थोडॉक्स सीरियन चर्च के प्रमुख बेसलियस मारथोमा के साथ इंदौर के राधे-राधे बाबा व महंत लक्ष्मणदास महाराज।

पहला सत्र पूर्ण होते ही रजिस्ट्रेशन हुए बंद

इंदौर।

सिंहस्थ से पहले तीन दिवसीय धर्म सम्मेलन में भाग लेने वालों का मौके पर ही रजिस्ट्रेशन करने के दावे किए जा रहे थे, लेकिन पहला सत्र पूरा होते ही रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया बंद कर दी गई। शनिवार को पहले दिन सम्मेलन की शुरुआत 9.30 बजे हुई और पहला सत्र दोपहर करीब 12.30 बजे पूरा हुआ। पहला सत्र समाप्त होने से पहले ही प्रक्रिया बंद कर दी गई। इस संबंध में रजिस्ट्रेशन करने वालों से जानकारी ली तो कहा हमें आदेश मिला है कि अब रजिस्ट्रेशन नहीं करना है।

शिव की भक्ति से सराबोर हुआ माहौल

आयोजन के दौरान सिंहस्थ की ब्रांडिंग के लिए उज्जैन से परिचित कराती एक झांकी भी आयोजन स्थल पर रखी गई। इसके बीच में शिवलिंग और चारों ओर उज्जैन के धार्मिक और पौराणिक महत्व से पराचित कराते चित्र।

यह रही व्यवस्था

अतिथियों को भोजन में मटर पनीर, बेसन टिक्का, राजमा व दाल सहित चार प्रकार की सब्जी, रोटी, रायता, चावल, रसगुल्ले व बरफी परोसी गई। जनसंपर्क अधिकारी विजय दुबे ने बताया यही व्यवस्था सभी अतिथियों हेतु रही।

माय इन्दौर

आप चाहते हैं अपने शहर को आप गर्व से कहें
"माय इन्दौर".. "अपना इन्दौर".. तो लिखें...

- इन्दौर शहर में कही आपके आसपास कोई घटना, हलचल, गलत काम या कोई अपराध तो नहीं हो रहा है, हो रहा है तो क्या आप चाहते हैं कि वह प्रकाशित हो, तो आपका *माय इन्दौर* न्यूज पेपर लाया है आपके लिए सुनहरा अवसर।
- जब आपके पास किसी भी घटना की जानकारी हो या फोटो हो तो आप हमें वहीं से अपने मोबाईल से हमारी साईट पर या हमारे मोबाईल पर भेज सकते हैं।
- इन्दौर शहर के किसी भी सरकारी विभाग में आपका काम रूक रहा हो चाहे वह सेल्स टैक्स, सेंट्रल एक्साइज, आयकर, आरटीओ, टेलीफोन, विद्युत मंडल एवं नगर निगम से जुड़ा कार्य हो और उसका हल ना निकल रहा हो हमें संपर्क करें प्रमाण के साथ।
- आपके द्वारा दी गई जानकारी सार्वजनिक नहीं की जायेगी। आपकी अनुमति पर ही आपका नाम और मोबाईल नम्बर दिया जाएगा।
- हम इन्दौर की जनता के साथ हैं आप जो फोटो और खबर देंगे उससे उस प्रतिष्ठान को बेनकाब करेंगे और यदि इनके खिलाफ आईपीसी की धारा या उपभोक्ता फोरम के तरह कोर्ट में जाना चाहेंगे, तो हम आपकी कानूनी रूप से पूर्ण सहायता उपलब्ध करांएगे।

हमारा पता

जी-24, सुन्दरम कॉम्पलेक्स,
भंवरकुआ मेन रोड़,
केनरा बैंक के पीछे इन्दौर

फोन 07312447575 मो. नं. 9300007575
ई-मेल- myindorenews@gmail.com